दिवाकर चित्रकथा

रूप का गर्व

प्राकृत भारती अकादमी

अंक ३८
मूल्य १७.००

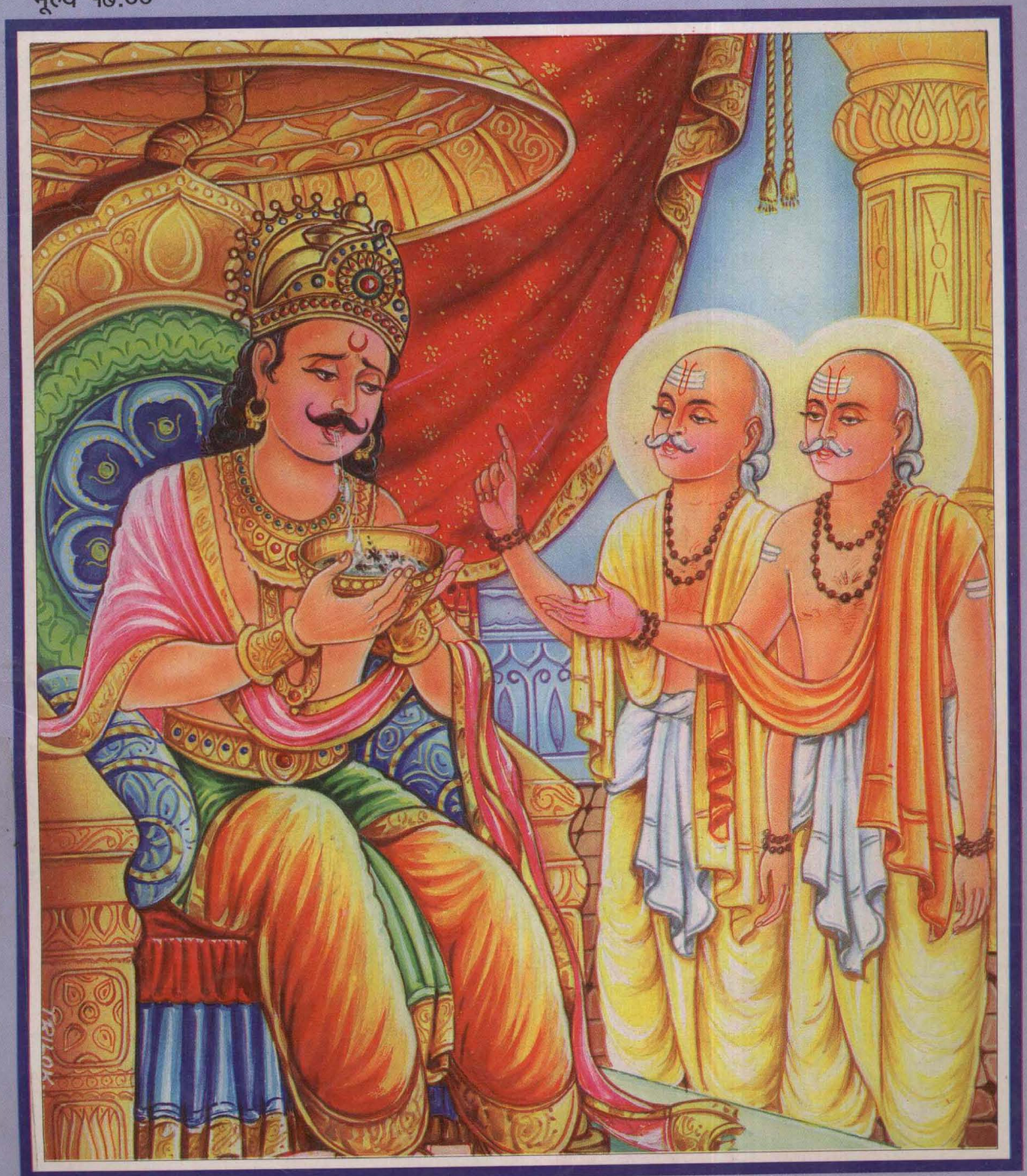

सुसंस्कार निर्माण | विचार शुद्धि : ज्ञान वृद्धि | मनोरंजन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूप का गर्व

चक्रवर्ती सम्राट संसार के सबसे विशाल साम्राज्य और अखूट संपदा का एक छत्र स्वामी होता है। इस युग में बारह चक्रवर्ती सम्राट हुए जिनमें चौथे चक्रवर्ती सम्राट थे सनत्कुमार।

सनत्कुमार के रूप-लावण्य एवं शरीर-सौंदर्य की देवता भी चर्चा करते थे। ऐसा अद्‌भुत सौंदर्य धरती पर किसी अन्य का नहीं था।

विशाल साम्राज्य से भी अधिक चक्रवर्ती सनत्कुमार को अपने रूप का गर्व था। देवताओं ने सम्राट का यह गर्व मिटाने के लिए ब्राह्मण वेश में आकर कहा—आपका शरीर सौन्दर्य तो सचमुच अद्‌भुत है, परन्तु जिस शरीर पर आपको इतना गर्व है, उस शरीर के भीतर कितने रोग छिपे हैं, "जरा विचार करो।" इसी बात का प्रत्यक्ष अनुभव करने से सम्राट की शरीर के प्रति आसक्ति और गर्व भंग हो गया। अहंकार टूट गया और वे मुनि बनकर तपस्या करने लग गये।

ज्ञानियों ने इस उदाहरण से यही शिक्षा दी है कि **"शरीरं व्याधि मन्दिरम्"**—शरीर तो रोगों का घर है। इस शरीर का महत्व सुन्दरता से नहीं, इससे कल्याण साधने में है। यही इस कथा की प्रेरणा है।

—महोपाध्याय विनय सागर **—श्रीचन्द सुराना "सरस"**

सम्पादक :	*प्रकाशन प्रबंधक :*	*चित्रांकन :*
श्रीचन्द सुराना "सरस"	संजय सुराना	श्यामल मित्र

प्रकाशक

श्री दिवाकर प्रकाशन

ए-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड, आगरा-282 002.

फोन : (0562) 351165. मोबाइल नं. : 98370-49530.

सचिव, प्राकृत भारती एकादमी, जयपुर

13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302 017. दूरभाष : 524828, 524827

अध्यक्ष, श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर (राज.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूप का गर्व
(सनत्कुमार चक्रवर्ती)

प्राचीनकाल में हस्तिनापुर में अश्वसेन राजा का राज्य था। राजा की पटरानी थी सहदेवी। एक रात रानी सहदेवी ने चौदह स्वप्न देखे।

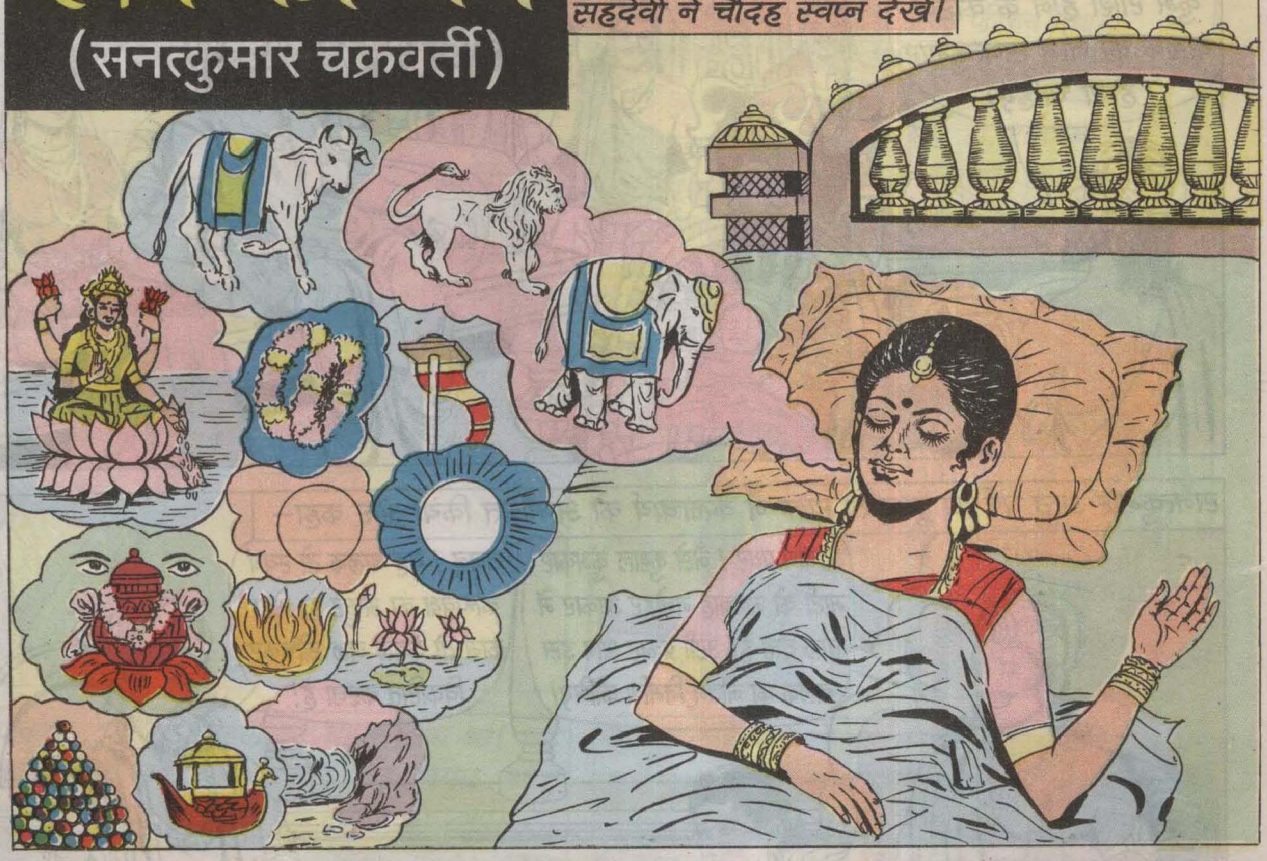

प्रातः उठकर उसने महाराज अश्वसेन को बताया। राजा ने राज-ज्योतिषी को बुलाकर स्वप्नफल पूछा–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ समय बाद रानी ने तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया। बारहवें दिन पुत्र का नामकरण उत्सव मनाया गया। परिजनों के बीच पण्डित ने कहा–

कुंभ राशि होने के कारण बालक का नाम सनत्कुमार होना चाहिए।

राजकुमार सनत्कुमार चिरायु हों।

सनत्कुमार आठ वर्ष का हुआ तो राजा ने कलाचार्य को आमंत्रित किया और कहा–

आचार्य प्रवर ! जैसे कुशल कुंभकार माटी को मनचाहे मनोहर आकार में ढाल देता है। उसी प्रकार आप इस बालक का जीवन निर्माण कीजिए।

राजन् ! यह बालक तो स्वयं कल्पवृक्ष का अंकुर है, मेरा काम तो केवल जल सींचकर विकसित करना है!

आचार्य के साथ सनत्कुमार गुरुकुल में आ गया।

गुरुकुल में ही महेन्द्र नामक एक क्षत्रिय कुमार के साथ सनत्कुमार की मित्रता हो गई। एक दिन महेन्द्र बोला–

देखो, मित्रता करके छोड़ मत देना।

मित्र, जैसे मेरी काया के साथ छाया लगी है। वैसे ही मैं कभी तुझे अपने से दूर नहीं होने दूँगा।

सनत्कुमार और महेन्द्र गुरुकुल में शास्त्र और शस्त्र दोनों प्रकार की विद्यायें सीखने लगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

106762
anmandir@kobatirth.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काफी देर तक महेन्द्र और अश्व-व्यापारी राजकुमार का इन्तजार करते रहे। जब राजकुमार शाम तक वापस नहीं आया तो व्यापारी ने चिन्तातुर स्वर में कहा–

यह सुनते ही महेन्द्र तुरन्त नगर से सैनिक लेकर राजकुमार की खोज में चल दिया।

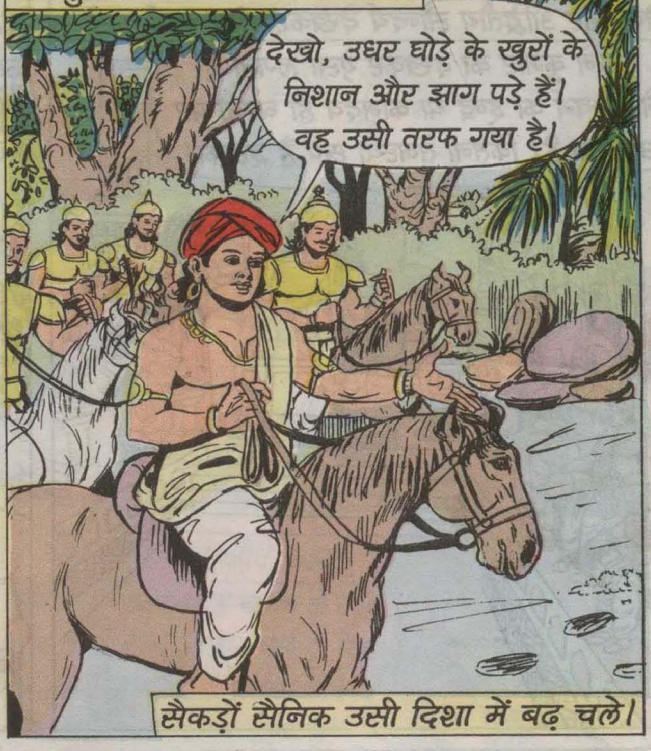

तभी अचानक भयंकर आँधी-तूफान चलने लगा। आकाश में बिजली कड़कड़ाने लगी और मूसलाधार वर्षा प्रारम्भ हो गई। सभी पेड़ की ओट में खड़े हो गये–

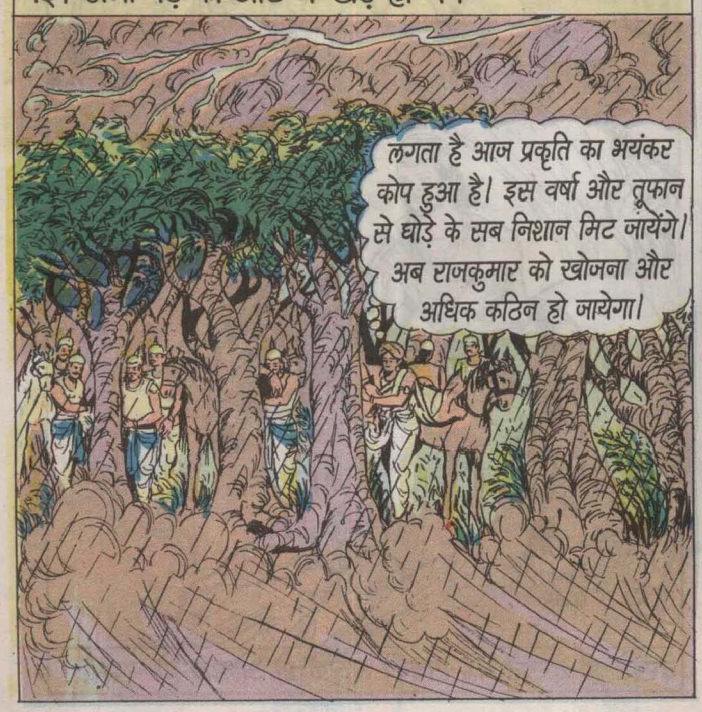

कुछ समय बाद वर्षा रुकते ही महेन्द्र सनत्कुमार को खोजने घने जंगल की ओर चल दिया। उस भयानक जंगल में भटकते हुए सभी सैनिक महेन्द्र से बिछुड़ गये। वह अकेला ही घोड़े की लगाम पकड़े सनत्कुमार को खोजने के लिये घूमता रहा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक वर्ष तक लगातार जंगलों में भटकते हुए एक दिन महेन्द्र ने आकाश में सारस, हंस, बगुले आदि पक्षियों को पूर्व दिशा की ओर जाते देखा। उसने सोचा–

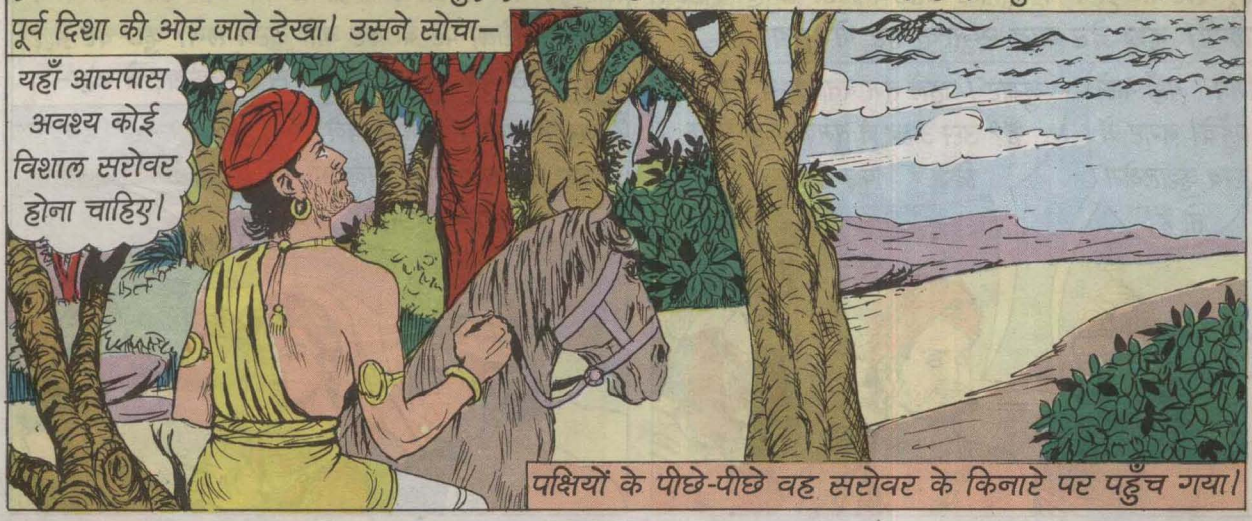

वहाँ देखा–अनेक सुन्दर तरुणियाँ नाच रही हैं। गीत गा रही हैं। तरुणियों के बालों में तरह-तरह के फूल लगे हैं। घुँघरू बँधे हैं। कुछ तरुणियाँ मृदंग बजा रही हैं तो कुछ वीणा के स्वर छेड़ रही हैं। और उन तरुणियों के बीच ऊँचे शिला पट पर अत्यन्त रूपवान युवक बैठा है। महेन्द्र एकदम रोमांचित हो गया।

उसने-उधर घोड़ा दौड़ा दिया। पास पहुँचकर महेन्द्र ने अपने मित्र को पहचान लिया। वह घोड़े से उतरकर युवक से लिपट गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुन्दरियाँ नृत्य बन्द कर आश्चर्य से उन्हें देखने लगीं। कुछ देर बाद सनत्कुमार ने पूछा–

मित्र ! यहाँ कैसे पहुँचे। नगर में सब कुशलक्षेम तो है।

कुमार ! पहले तुम बताओ, ये सब कौन हैं? उस अश्व ने तुमको कहाँ पटक दिया.... फिर क्या हुआ?

तभी एक तरुणी फल और शीतल पेय लेकर आ गई। दोनों मित्र वहाँ शिला पर बैठकर बातें करने लगे। कुछ देर बाद पास में बैठी एक रूपवान तरुणी से सनत्कुमार ने कहा–

बकुलमति ! तुम अपने देवर को वह सब सुनाओ जो घटित हुआ।

बकुलमति सुनाने लगी–उस दिन आपके मित्र को लेकर अश्व घने जंगल में दौड़ता रहा, दौड़ता रहा। अन्त में थककर इन्होंने लगाम छोड़ दी। घोड़ा चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ा। उसके मुँह से झाग निकले और मर गया। उस भयानक मरुस्थल में भूखे-प्यासे भटकते हुए ये एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने बैठे, वहीं मूर्च्छित हो गये। उस वृक्ष पर एक यक्ष रहता था। उसने देखा–

कोई पुण्यशाली पुरुष आपत्ति में फँसा है। मुझे इसकी मदद करनी चाहिए।

कोमल हृदय यक्ष ने सनत्कुमार के चेहरे पर शीतल जल छिड़ककर उसे सचेत किया।

सनत्कुमार का कण्ठ प्यास से सूख रहा था। यक्ष ने उसे जल लाकर पिलाया।

लो ! इस शीतल जल से अपनी प्यास बुझाओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जल पीकर सनत्कुमार ने पूछा–

देव ! आप कौन हैं? और यह अमृत के समान जल कहाँ से लाये?

यहाँ पास में ही मानसरोवर है, उसी का यह अमृत जल है।

क्यों नहीं, यह हमारा कर्त्तव्य है।

मेरे शरीर में दाह लगी है क्या आप मुझे मानसरोवर तक पहुँचाने की कृपा करेंगे?

देवता ने सनत्कुमार को मानसरोवर में पहुँचा दिया।

आर्यपुत्र ने शीतल जल में प्रवेश किया। शरीर की क्लान्ति, दाह सब शान्त हो गई।

वाह ! मानसरोवर के शीतल जल से शरीर के सब दाह शान्त हो गये।

सनत्कुमार मानसरोवर में स्नान कर रहा था कि अचानक एक क्रूर यक्ष वहाँ प्रकट हुआ और फुँकारता हुआ बोला–

जैसे भूखा सिंह हाथी को खोजता है, वैसे ही मैं बहुत दिनों से तेरी खोज कर रहा हूँ। अब तू बचकर कहाँ जायेगा?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उस क्रूर यक्ष# ने एक विशाल वटवृक्ष को जड़ सहित उखाड़कर सनत्कुमार पर प्रहार किया। सनत्कुमार ने अपनी दोनों भुजाओं में उसे रोक लिया।

फिर यक्ष को पकड़कर दो-तीन जोरदार मुष्टि के प्रहार किये।

यक्ष घबराकर चीखता हुआ भाग छूटा।

स्नान आदि करके सनत्कुमार वहाँ से चल दिया। कुछ आगे चलने पर एक सुन्दर उद्यान में क्रीड़ा करती आठ विद्याधर कन्याएँ मिलीं। सनत्कुमार को देखकर बोलीं–

आइये कुमार ! हम आपका ही इन्तजार कर रही थीं?

हैं ! मेरा इन्तजार !! यह क्या मायाजाल है?

फुटनोट

यह यक्ष पिछले जन्मों से सनत्कुमार के साथ शत्रुता रखता था। कई जन्म पूर्व की घटना है। विक्रमयश नाम का एक राजा था। उसने एक बार नागदत्त नाम के सेठ की सुन्दर नवयौवना पत्नी को देखा। उस पर आसक्त हो अपहरण कर लिया। वह युवती भी उसके प्रेम में फँस गई। नागदत्त बहुत दुःखी हुआ, परन्तु राजा के अन्याय का वह कुछ भी प्रतिकार कर न सका। दुःखी और ग्लानि से भरा नागदत्त घर छोड़कर जंगल में चला गया। प्रतिशोध की भावना के साथ मरा इस जन्म में वह यक्ष बना। विक्रम राजा भी बाद में अपनी भूल पर पश्चात्ताप करने लगा। वह साधु बनकर तपस्या करने लगा। कई जन्मों तक तप करने के बाद वही सनत्कुमार बना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आठों कन्याएँ उसे नगर के अन्दर अपने पिता राजा भानुवेग के पास ले गईं। राजा भानुवेग ने उसका जोरदार स्वागत किया। सनत्कुमार का दिमाग अभी भी चक्कर खा रहा था। आखिर उसने भानुवेग से पूछ ही लिया–

यह सुनकर राजा भानुवेग मुस्कराया और समाधान करते हुए बोला–

राजा भानुवेग के आग्रह पर सनत्कुमार ने उन आठ विद्याधर कन्याओं के साथ पाणिग्रहण कर लिया।

रात्रि के समय सनत्कुमार अपने शयन-कक्ष में सोया हुआ था। उसी समय वही दुष्ट यक्ष वहाँ से गुजरा। उसने सनत्कुमार को देखा–

उसने सनत्कुमार को उठाया और घने जंगलों में फैंक दिया।

कुछ देर बाद सनत्कुमार की नींद खुली। वह चारों ओर देखने लगा–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फिर वह अकेला ही उस बियावान वन में भ्रमण करने लगा। तभी एक सात मंजिला महल दिखाई दिया–

इस जंगल में यह महल ! जरूर कोई मनुष्य भी यहाँ होगा?

वह महल की ओर चल पड़ा।

महल का द्वार खुला हुआ था। वह सीधा महल के अन्दर घुस गया। घूमते-घूमते जैसे ही पहली मंजिल पर पहुँचा उसे एक नारी का क्रन्दन सुनाई दिया–

कोई मेरी रक्षा करो ! बचाओ। मुझे यहाँ से निकालो।

यहाँ नारी का क्रन्दन ! चलकर देखना चाहिए?

यह सोचकर वह सावधानी से क्रन्दन की दिशा में चलता हुआ एक कक्ष में पहुँचा। देखा एक रूप लावण्यवती आभूषणों से सजी सुन्दरी पलँग पर बैठी करुण स्वर में पुकार कर रही है।

हे कुरुकुल कलाधर सनत्कुमार ! इस जन्म में न सही अगले जन्म में आप ही मेरे पति बनना।

अरे ! यह तो मेरा नाम पुकार रही है। कहीं कोई मायाजाल तो नहीं है। मुझे होशियार रहना चाहिए।

फिर सावधान होकर सुन्दरी के सामने जाकर उससे पूछा–

सुन्दरी ! यह सनत्कुमार कौन है? तुम कौन हो? यहाँ कैसे आई और क्यों रो रही हो?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपने सामने एक सुन्दर वीर पुरुष को खड़ा देखकर सुन्दरी हर्षित हो पलंग से उठ गई। नीची नजर किये वह बोली–

देव ! आप कौन हैं, मैं नहीं जानती। किन्तु लगता है आप कोई दयालु वीर पुरुष हैं, मेरे दुःखों को दूर करने में समर्थ हैं इसलिए आपके प्रश्नों का उत्तर देती हूँ।

सुन्दरी ! विश्वास रखो, तुम सत्य कहोगी तो तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा।

सुन्दरी ने अपनी कहानी सुनाई–

मैं सौराष्ट्र के साकेत राज की कन्या सुनन्दा हूँ। मैंने अपने स्वप्न के अनुसार कुरुकुल के सूर्य सनत्कुमार को अपना पति स्वीकार किया है, वे महान् पराक्रमी हैं। मेरे माता-पिता ने भी अंजलि दान कर मुझे उनके लिए दान कर दिया है।

फिर क्या हुआ? तुम सनत्कुमार के पास गई क्यों नहीं?

एक दिन मैं अपने महल की छत पर सोई थी तब एक विद्याधर ने मेरा अपहरण कर लिया और विद्याबल से इस प्रासाद का निर्माण कर मुझे यहाँ अकेली छोड़ गया।

क्या वह भाग गया?

नहीं, वह कुछ दिन बाद आयेगा और मेरे साथ जबर्दस्ती विवाह करने का प्रयास करेगा .... हाय ! अब मेरा क्या होगा?

सुन्दरी ! तुम डरो मत ! मैं ही कुरुवंशी सनत्कुमार हूँ, जिसे तुमने स्वप्न में देखा है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यह सुनकर सुनन्दा आश्चर्य और हर्ष के साथ उसकी तरफ देखने लगी।

सच ! अहा .... मेरा भाग्य जाग उठा ! आप ही हैं कुरुकुल के सूर्य?

तभी वह विद्याधर भी आ गया। उसने सनत्कुमार को देखकर हुँकार की–

कौन है तू तस्कर ! यहाँ मेरे महलों में किसलिए आया?

तस्कर मैं नहीं, तू है। तुमने एक आर्य-कन्या का अपहरण किया है मैं इसकी रक्षा करने आया हूँ।

मूर्ख ! इसकी रक्षा तू क्या करेगा, पहले अपनी रक्षा कर !

विद्याधर सनत्कुमार को दोनों हाथों में उठाकर आकाश में उड़ गया।

तभी सनत्कुमार ने विद्याधर के मस्तक पर जबर्दस्त पाद-प्रहार किया।

ले दुष्ट, अपनी करनी का फल चख।

धम

प्रहार से विद्याधर मूर्च्छित होकर आकाश से सीधा समुद्र में गिर पड़ा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सनत्कुमार भी समुद्र में तैरता हुआ किनारे पर आया और वापस महल में आकर सुनन्दा से मिला। बोला–

सुनन्दा ! अब तुम निश्चिन्त हो जाओ ! वह दुष्ट अपने पापों का फल पा चुका है।

वहीं दोनों ने गंधर्व विवाह कर लिया। तभी विद्याधर की बहन संध्यावली बिफरी हुई सी वहाँ आ पहुँची। उसने पूछा–

मेरे भाई को किसने मारा?

सुन्दरी ! तुम्हारा भाई मेरे हाथों मर चुका है। उसे अपने पापों का फल मिल गया।

यह सुनकर संध्यावली सनत्कुमार के चरणों से लिपट गई। बोली–

आर्यपुत्र ! नैमित्तिक ने कहा था, जो मेरे भाई की घात करेगा वही मेरा पति होगा। इसलिए आप ही मेरे स्वामी हैं। मुझे स्वीकार कीजिये !

वह बातें कर ही रहे थे तब तक संध्यावली का पिता अशनिवेग अपनी सेना लेकर आ गया। उसने सनत्कुमार को ललकारा–

दुष्ट ! तूने मेरे पुत्र का वध किया है। अब यमलोक जाने को तैयार हो जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसी समय उन आठ कन्याओं के पिता भानुवेग भी सेना लेकर सनत्कुमार की खोज करते हुए आ पहुँचे। दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। सनत्कुमार ने चक्र द्वारा अशनिवेग का मस्तक काट डाला।

अब अशनिवेग की सेना ने सनत्कुमार के समक्ष समर्पण कर कहा–

हे देव ! अब आप ही हमारे स्वामी हैं।

हे पराक्रमी कुमार ! कृपया आप हमारे साथ वैताढ्य पर्वत पर पधारें। हम आपके विजय के उपलक्ष्य में उत्सव का आयोजन करना चाहते हैं।

अनेक विद्याधर राजाओं के साथ सनत्कुमार वैताढ्य पर्वत पर गया। वहाँ आठ दिन तक उसका विजयोत्सव मनाया गया।

एक दिन वैताढ्य पर्वत निवासी विद्याधरों के राजा ने सनत्कुमार से कहा–

कुमार ! मैंने बहुत दिन पहले एक ऋद्धिधारी मुनि के दर्शन किये थे। उनके दर्शन कर मैंने पूछा–

ऋषिवर ! मेरी बकुलमति आदि सौ कन्याओं का पति कौन होगा?

राजन् ! चतुर्थ चक्रवर्ती सनत्कुमार यहाँ आयेंगे और वे ही इन कन्याओं के पति होंगे।

सनत्कुमार ने हँसकर कहा–

तब तो बिना बुलाये ही हम आ गये?

हमारे भाग्य ने आपको गुप्त आमंत्रण दिया है। अनुग्रह कर हमारी यह भेंट स्वीकार कीजिए !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सनत्कुमार ने विवाह के लिये स्वीकृति दे दी। उसी वैताढ्य पर्वत पर हम सौ बहनों का आर्यपुत्र के साथ पाणिग्रहण हो गया।

यह कहकर बकुलमति हँसकर बोली–

देवर जी, इतना सब कुछ पाकर भी आर्यपुत्र सदा आपकी याद में उदास रहते थे। यहाँ मानसरोवर पर आकर भी इन्हें आपकी कमी खटकती रही थी।

तभी सनत्कुमार उठकर आये। बोले–

मित्र ! तुमने हमारी आप बीती सुन ली ! अब अपनी सुनाओ !

मित्र ! मेरी कहानी का सार यही है कि आपके माता-पिता पुत्र-विरह में रात-दिन आँसू बहा रहे हैं। इसलिए अब हस्तिनापुर चलना चाहिए।

माता-पिता की याद आते ही सनत्कुमार भी उदास हो गया, और बोला–

मित्र ! तुम्हारा कथन सत्य है, अब शीघ्र ही हमें हस्तिनापुर पहुँचना चाहिए।

सनत्कुमार, महेन्द्रसिंह और सभी सुन्दरियाँ विमानों में बैठकर वैताढ्य पर्वत पर आ गये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुभ दिन देखकर सनत्कुमार ने हस्तिनापुर के लिए विमानों में बैठकर प्रस्थान किया। उसके साथ अनेक विद्याधर राजा भी सेना लेकर चल पड़े। विमान हस्तिनापुर के पास पहुँचे तो वहाँ नगर निवासी आश्चर्य से देखने लगे–

राजा अश्वसेन को सनत्कुमार के आगमन का समाचार मिला। राजा अश्वसेन और रानी सहदेवी पुत्र की अगवानी करने नगर-द्वार पर पहुँचे। विशाल सेना और सैकड़ों राजाओं के साथ सनत्कुमार ने नगर में प्रवेश किया। राजा-रानी पुत्र को देखकर आनंदित हो गये।

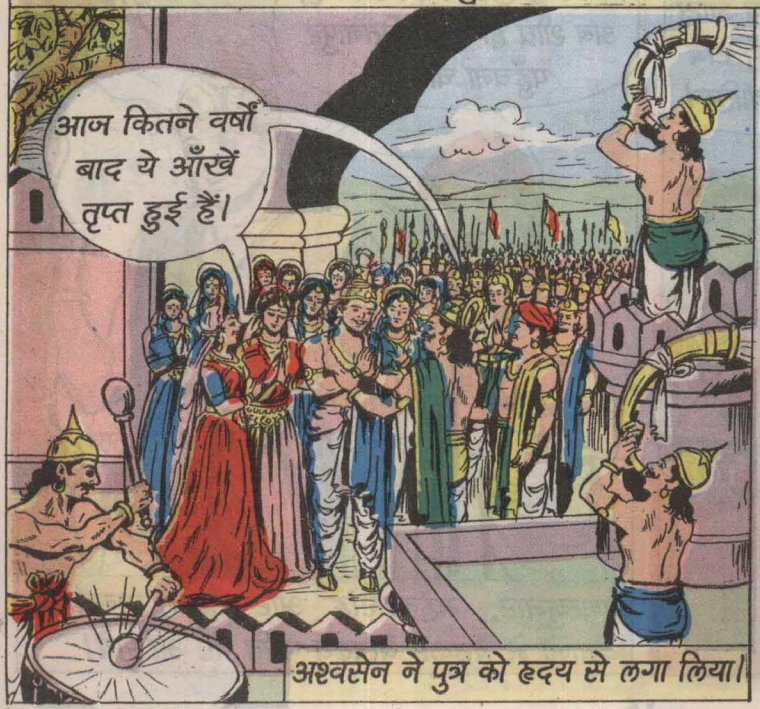

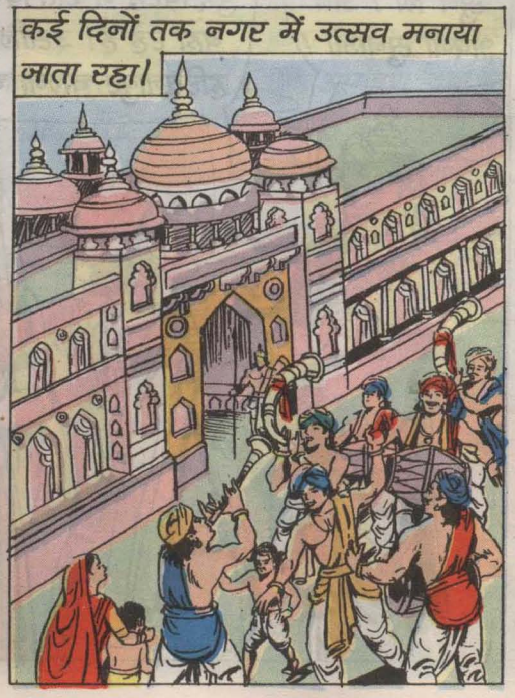

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ दिनों बाद तीर्थंकर धर्मनाथ स्वामी हस्तिनापुर पधारे। राजा अश्वसेन, सनत्कुमार आदि हजारों नगरजन उनके दर्शन करने गये। प्रभु ने देशना में कहा–

मनुष्य सोचता है, अभी जवानी है, संसार के सुख भोग लूँ, बुढ़ापे में संयम लूँगा, परन्तु मृत्यु का क्या भरोसा, बुढ़ापा आने से पहले ही मृत्यु आ गई तो यह जीवन व्यर्थ ही चला जायेगा। इसलिए शुभ कार्य करने में विलम्ब मत करो।

देशना सुनकर राजा अश्वसेन ने प्रार्थना की–

प्रभु ! मैं संसार त्याग कर दीक्षा लेना चाहता हूँ।

राजन् ! जो सत्कर्म करना है, शीघ्र करो !

महेन्द्रसिंह को सेनापति पद दिया।

आज से महेन्द्रसिंह को हस्तिनापुर की सेना का सेनानायक नियुक्त किया जाता है।

राजा ने सनत्कुमार का राजतिलक किया।

वत्स ! प्रजा को पुत्र की भाँति स्नेह करना।

महाराज सनत्कुमार चिरायु हों।

फिर राजा अश्वसेन रानी सहदेवी तथा अनेक लोगों के साथ तीर्थंकर धर्मनाथ स्वामी के पास दीक्षित हो गये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक बार महाराज सनत्कुमार राजसभा में बैठे थे। तभी आयुधशाला के द्वारपाल ने आकर समाचार दिया–

सनत्कुमार ने आयुधशाला में जाकर चक्र रत्न की सुगन्धित जल, फूल आदि से पूजा अर्चना की।

फिर षट्खण्ड विजय की तैयारियाँ प्रारम्भ हुईं। सेनापति महेन्द्रसिंह ने मित्र राजाओं को सूचना भेज दी–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सभी मित्र राजाओं के साथ विशाल सैन्य बल लेकर चक्रवर्ती सनत्कुमार षट्खण्ड विजय यात्रा पर निकल पड़े।

कई वर्षों में भरतक्षेत्र के छह खण्ड विजय कर सनत्कुमार हस्तिनापुर लौटे। हस्तिनापुर में एक विशाल विजय महोत्सव का आयोजन हुआ।

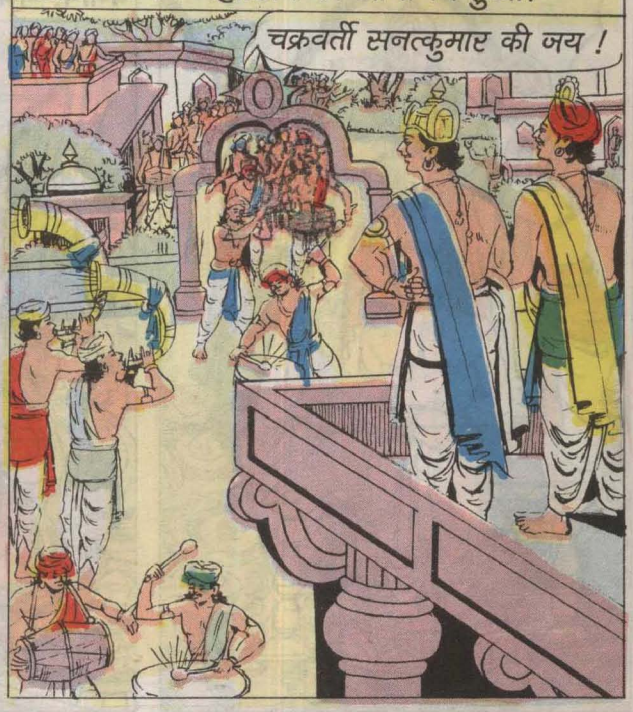

सौधर्म देवलोक के स्वामी शक्रेन्द्र ने कुबेर को बुलाकर कहा–

कुबेर अनेक अलौकिक उपहार लेकर चक्रवर्ती सनत्कुमार की सेवा में उपस्थित हुआ।

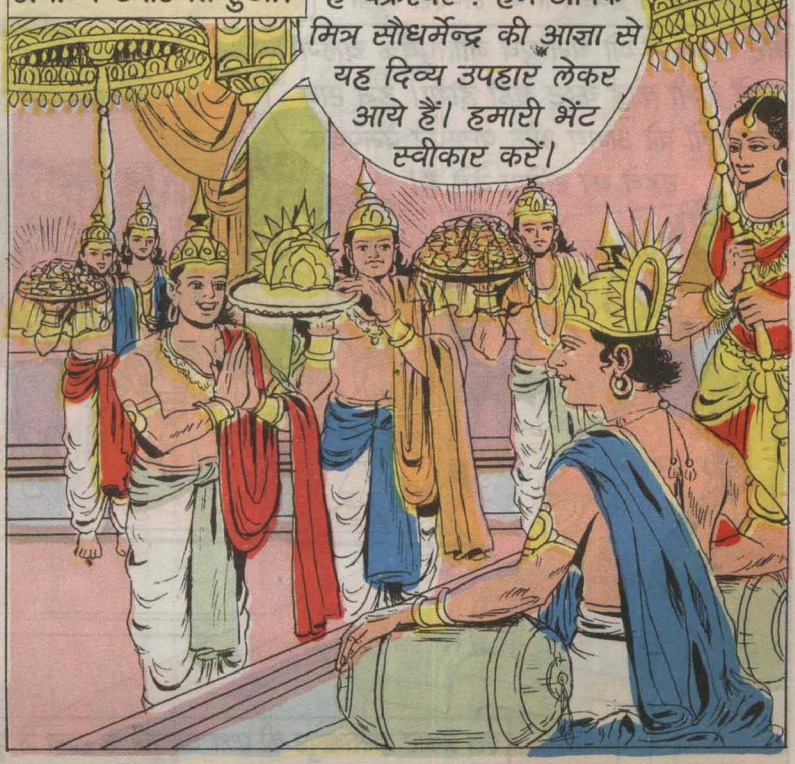

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवताओं ने पवित्र जल से चक्रवर्ती का अभिषेक किया।

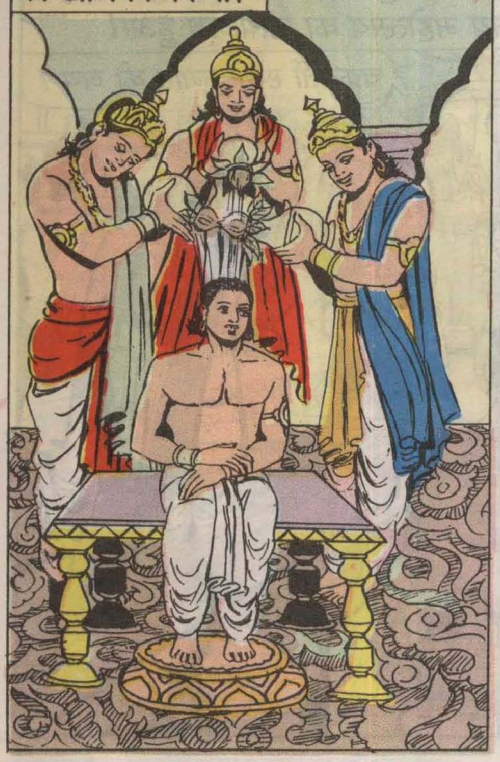

फिर तिलोत्तमा, उर्वशी, मेनका और रंभा ने दिव्य देव नृत्य प्रस्तुत किया। नारद ने वीणा वादन किया, तुम्बुरु ने मृदंग बजाये, गंधर्व कुमारों ने विविध आश्चर्यजनक करतब दिखाये।

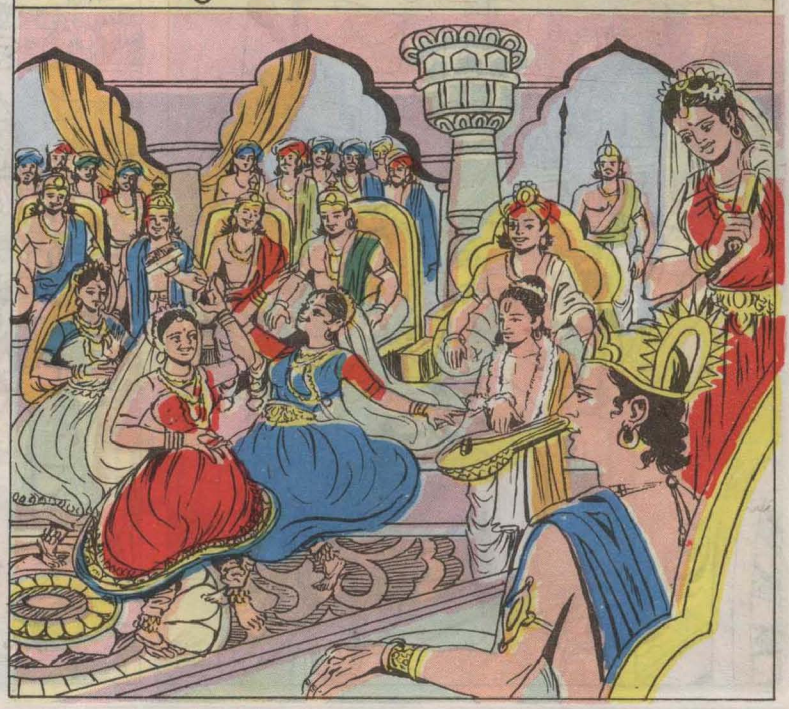

इसके बाद राजाओं, श्रेष्ठियों आदि ने विविध उपहार भेंटकर चक्रवर्ती का अभिनन्दन किया। अन्त में चक्रवर्ती सनत्कुमार ने प्रजाजनों को सन्देश दिया–

मेरे राज्य में जो धर्म एवं नीतिपूर्वक चलेंगे उन्हें कभी कोई कष्ट नहीं होगा। हम सब प्रजाजनों को अभय और परस्पर प्रेमपूर्वक रहने का संदेश देते हैं।

चक्रवर्ती सम्राट् की आज्ञा से हस्तिनापुर राज्य में १२ वर्ष तक किसी प्रकार का कर, दण्ड तथा शुल्क आदि नहीं लगेगा।

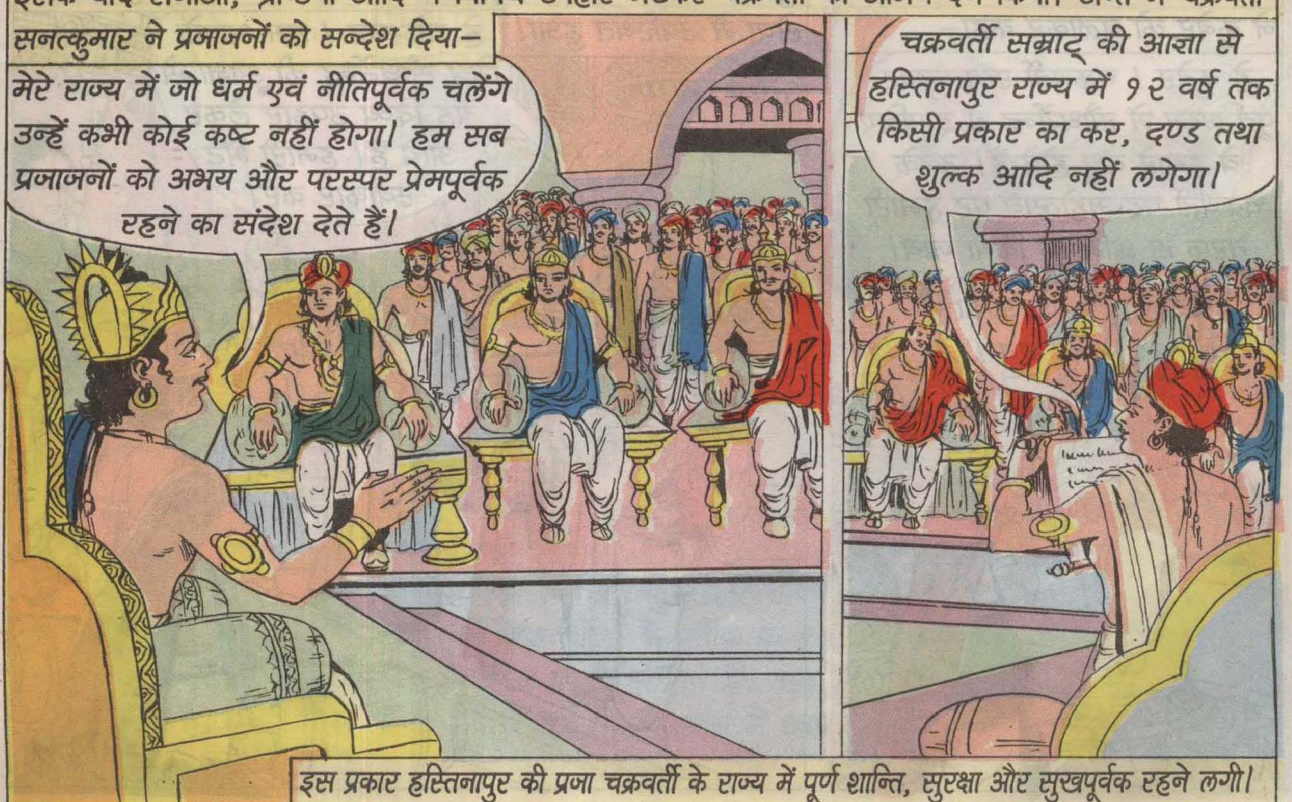

इस प्रकार हस्तिनापुर की प्रजा चक्रवर्ती के राज्य में पूर्ण शान्ति, सुरक्षा और सुखपूर्वक रहने लगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक दिन सौधर्म देवलोक में एक विशेष नाटक हो रहा था। उसी समय किसी दूसरे स्वर्ग का एक तेजस्वी देव वहाँ आ गया। उसको देखकर देवगण कहने लगे–

वाह ! क्या अद्भुत तेज है इसके चेहरे पर, क्या मोहक सौन्दर्य है इसका?

देवताओं को इस तरह विस्मित देखकर शक्रेन्द्र ने कहा–

इस देव ने पूर्व जन्म में आयंबिल वर्धमान तप किया था। उसी तप के प्रभाव से अद्भुत रूप व कांति मिली है।

तब देवताओं ने पूछा–

देवराज ! क्या इसके समान दूसरे किसी को भी ऐसी रूप-ऋद्धि प्राप्त है?

हाँ है ! मनुष्यलोक में सनत्कुमार चक्रवर्ती इससे भी बढ़कर रूपमान एवं तेजस्वी हैं।

सभा में बैठे दो देवों को शक्रेन्द्र की बात सुनकर शंका हुई। वे बोले–

देवराज ! हम प्रत्यक्ष देखना चाहते हैं।

क्यों नहीं ! हमारी अनुमति है। आप मनुष्यलोक में जाकर अवश्य देखिये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोनों देव आकाश से पृथ्वी पर आये और ब्राह्मण का रूप धारण किया।

और चक्रवर्ती सनत्कुमार के महल के द्वार पर पहुँचे। द्वारपाल से कहा–

हम चक्रवर्ती के दर्शन करना चाहते हैं।

आप यहीं ठहरिये। मैं आज्ञा लेकर आता हूँ।

चक्रवर्ती सनत्कुमार प्रातः व्यायाम और तेल मालिश करने के बाद स्नान की तैयारी कर रहे थे। तभी द्वारपाल ने आकर निवेदन किया–

राजन्! दो वृद्ध ब्राह्मण अभी इसी समय आपका दर्शन चाहते हैं।

प्रजा के लिए मेरा द्वार सदा खुला है। उन्हें आने दो।

दोनों ब्राह्मण विशाल स्नानागार में आये और विस्मित से चक्रवर्ती की अद्भुत सुन्दरता को निहारने लगे–

वाह! क्या शरीर का गठन है?

कितनी सुकुमारता और कोमलता है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ समय बाद सुन्दर वस्त्र-आभूषणों से सज्जित हो चक्रवर्ती सिंहासन पर आकर बैठे। ब्राह्मणों को राजसभा में बुलाया गया। दोनों ब्राह्मण आये कुछ देर तक शरीर को देखते रहे।

फिर कुछ उदास होकर सिर धुनने लगे–

नहीं ! अब वह बात नहीं रही।

विप्रवर ! क्या फर्क पड़ गया इतनी-सी देर में?

ब्राह्मणों ने विनम्रतापूर्वक कहा–

राजन् ! हमने स्वर्ग में आपके अद्वितीय रूप-लावण्य की प्रशंसा सुनी थी। हमें विश्वास नहीं हुआ, किन्तु व्यायामशाला में आपको देखकर शक्रेन्द्र का कथन सत्य लगा।

तो फिर अब क्या परिवर्तन हो गया?

ब्राह्मण–

राजन् ! अब आपका वह सौन्दर्य क्षीण हो रहा है। शरीर में अनेक रोग घुस चुके हैं..... आखिर यह मानव-देह तो क्षण-भंगुर जो है।

चक्रवर्ती ने ब्राह्मणों का उपहास करते हुए कहा–

ऐसा कैसे हो सकता है। तुम्हें भ्रान्ति तो नहीं हुई?

महाराज ! प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या जरूरत है। अभी आप थूककर देखिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चक्रवर्ती के सामने ही सोने का स्वच्छ थूकदान रखा था। उन्होंने उसमें थूका।

तो आँखें आश्चर्य से फटी-सी रह गईं।

हैं ! यह क्या ·····? थूक में कीड़े !

तभी दोनों देव अन्तर्ध्यान हो गये।

सनत्कुमार ने वापस राजमहल आकर अपना मुख दर्पण में देखा–

अरे ! मेरे मुख की कांति तो क्षीण हो रही है, मुख मुर्झाया-सा लग रहा है। पसीने की गंध आ रही है?

शरीर की नश्वरता पर विचार करते-करते चक्रवर्ती का मन संसार के भोगों से विरक्त हो गया। उन्होंने तुरन्त निर्णय लिया–

अब यह शरीर रोगग्रस्त होने से पहले ही तप-साधना कर लेनी चाहिए।

सनत्कुमार सोचने लगे। सोचते-सोचते उनकी चिन्तनधारा बदल गई।

जैसे दीमक हरे-भरे वृक्ष को भीतर से खोखला कर देती है। वैसे ही व्याधि शरीर को भीतर ही भीतर नष्ट कर डालती है। क्या मैं इसी क्षणिक सुन्दरता पर इतना अभिमान कर रहा हूँ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चक्रवर्ती सनत्कुमार ने अपने बड़े पुत्र को राज-सिंहासन सौंपा और उपवन में विराजित विनयंधर सूरि आचार्य के पास पहुँचे। उन्होंने आचार्य से निवेदन किया।

हे महामुने ! मेरा मन इस भौतिक संसार से विरक्त हो चुका है। कृपया मुझे दीक्षा देकर आत्म-जागृति का पथ दिखाइये।

विनयंधर आचार्य ने उन्हें दीक्षा प्रदान कर दी।

रानियाँ, पुत्र, मंत्री आदि परिजन विलाप करते हुए उनसे प्रार्थना करने लगे–

हे नाथ ! आप हमें मत छोड़िये, हम आपके साथ-साथ रहेंगे। जब तक आप वापस नहीं लौटेंगे हम आपके पीछे-पीछे घूमेंगे।

किन्तु निस्पृह चित्त मुनि ने किसी की भी पुकार नहीं सुनी। छह महीने तक परिजन उनके पीछे रहे, किन्तु मुनि सनत्कुमार ने आँख उठाकर भी नहीं देखा। तब उदास-निराश होकर सब चले गये।

मुनि सनत्कुमार एकल विहार करते थे। एक दिन उन्होंने विचार किया–

"शरीरं व्याधिमन्दिरं"–शरीर तो रोगों का घर है। साथ ही "शरीरं मोक्षसाधनम्"–इससे मोक्ष की साधना भी होती है। इसलिए रोग मन्दिर का योग मन्दिर बनाने में ही समझदारी है।

और फिर उन्होंने संकल्प लिया–

अब मैं जीवन-पर्यन्त दो-दो दिन का उपवास, तप करूँगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक बार दो दिन के उपवास, तप का पारणा लेने वे एक गृहस्थ के घर पर गये। गृहस्थ ने कहा–

फिर गृहस्थ के हाथ से वही भिक्षा ग्रहण की और पारणा किया। उन्हें लगा जैसे शरीर की ममता और अहंकार एक साथ चरमराने लगे हैं।

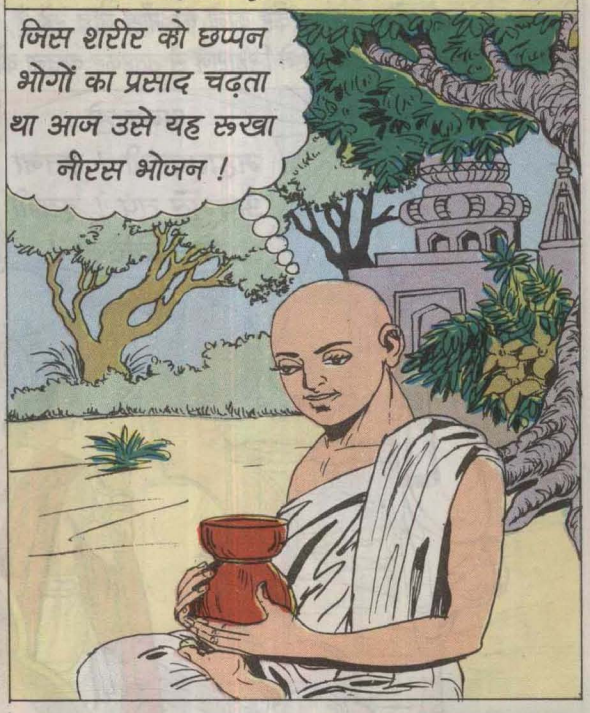

निरन्तर तप-आतापना, पद-विहार और रूखा भोजन आदि के कारण धीरे-धीरे शरीर में रोगों का प्रभाव बढ़ता गया। किन्तु फिर भी मुनि सनत्कुमार ने कभी शरीर की चिन्ता नहीं की।

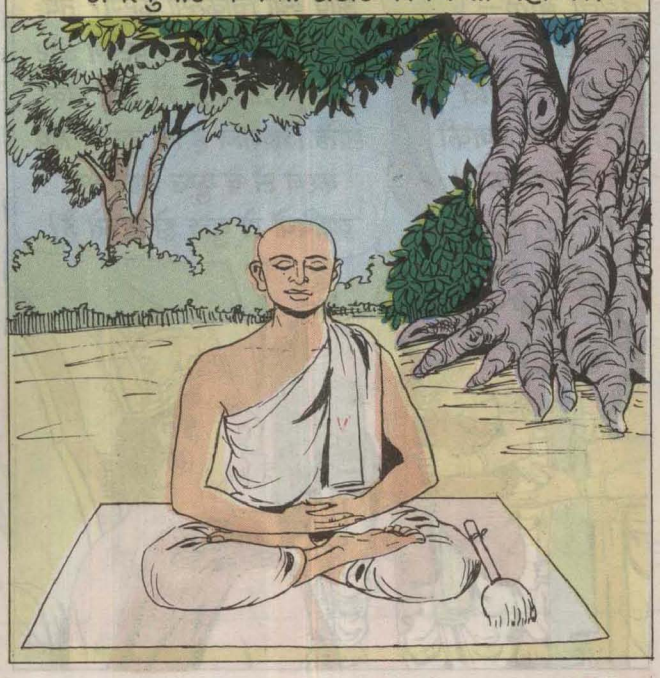

तभी विरक्ति ने उन्हें ललकारा–

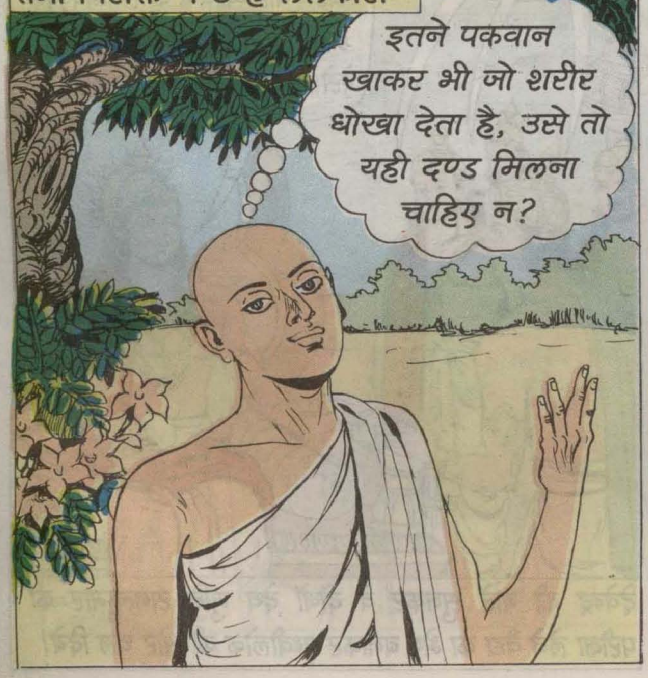

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक बार देव-सभा में बैठे देवराज ने मुनि सनत्कुमार को सूर्य के सामने आतापना लेते हुए देखा। उनके शरीर पर फोड़े-फुंसियाँ, गाँठें आदि निकली हुई हैं। जीव-जन्तुओं के काटे का घावों से खून रिस रहा है। सिर पर बैठे पक्षी चोंच मार-मारकर कानों का माँस नोंच रहे हैं, फिर भी मुनि अडोल खड़े हैं। देवराज ने सिंहासन से उतरकर वन्दना की–

देवताओं ने चकित होकर पूछा– पृथ्वीलोक पर

देवेन्द्र की बातें सुनकर वे दोनों देव मुनि सनत्कुमार की परीक्षा लेने वैद्य का भेष बनाकर पृथ्वीलोक की ओर चल दिये।

देवता बोले–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि सनत्कुमार ध्यान पूर्ण करके चलने ही वाले थे कि तभी वे दोनों देव वैद्य का रूप बनाकर बगल में झोली लटकाये हाथ में अनेक जड़ी-बूटी लिए हुए उनके सामने आये। बोले–

वैद्य–

दोनों देवों ने आश्चर्य से पूछा–

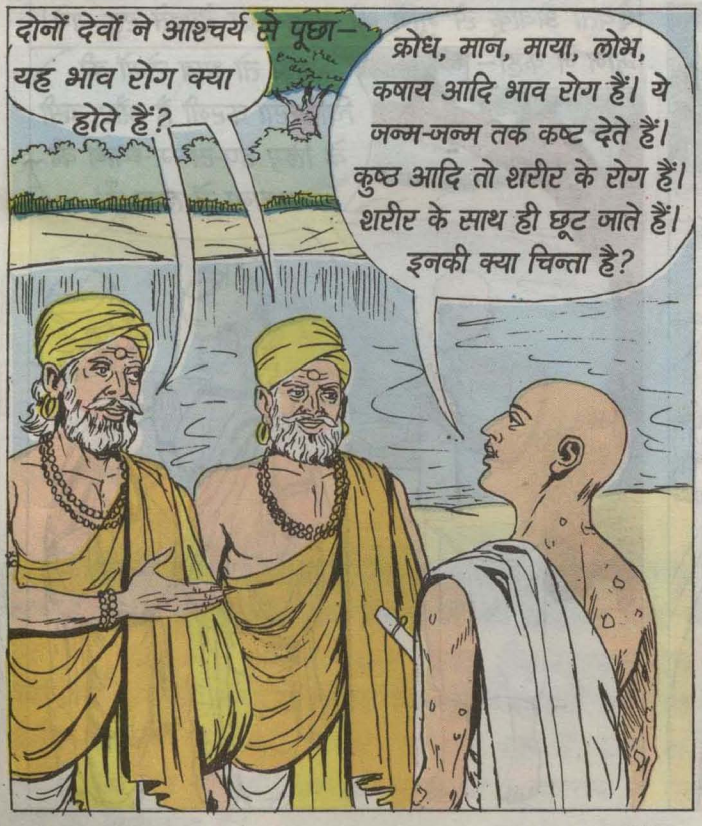

देव लज्जित से होकर बोले–

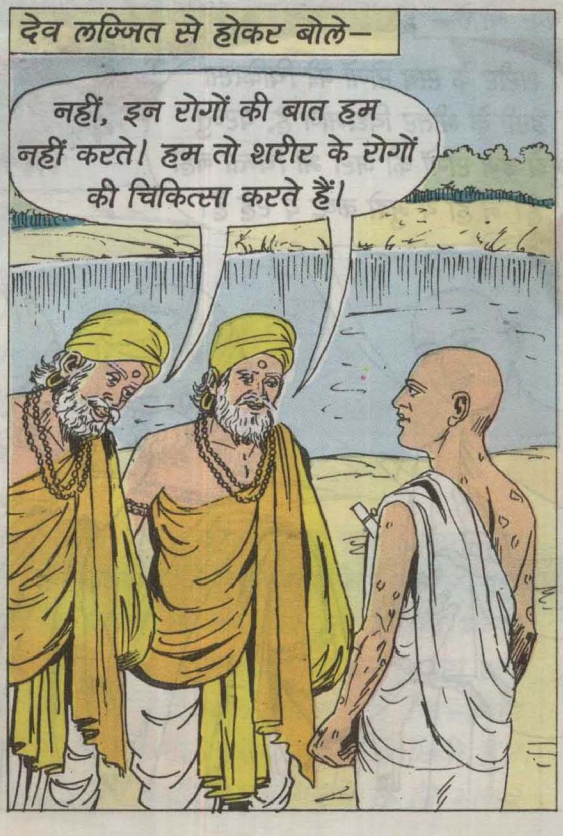

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि ने अपनी एक व्रण ग्रस्त अँगुली पर थूक लगाया।

क्षणभर में वह पूर्ण स्वस्थ सुन्दर हो गई।

?!!

फिर बोले—

शरीर के सब रोगों की चिकित्सा इसी के भीतर विद्यमान है, परन्तु मुझे इन रोगों की जरा भी चिन्ता नहीं है। न ही ये मुझे कष्ट दे रहे हैं।

देवता अवाक् से मुनि की मुख-मुद्रा देखते रह गये।

मुनि ने कहा—

मुझे तो भाव रोगों की चिकित्सा करनी है और उसी के लिए तप-संयम-ध्यान की साधना में लगा हूँ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देव अपने असली रूप में आ गये। उन्होंने भक्तिपूर्वक मुनि को प्रणाम किया–

तीन प्रदक्षिणा कर देवताओं ने मुनि सनत्कुमार की वन्दना की और स्वर्ग को चले गये।

मुनि सनत्कुमार ने ७०० वर्ष तक इसी प्रकार की घोर तप साधना करने के बाद अन्तिम समय में संलेखना ग्रहण की।

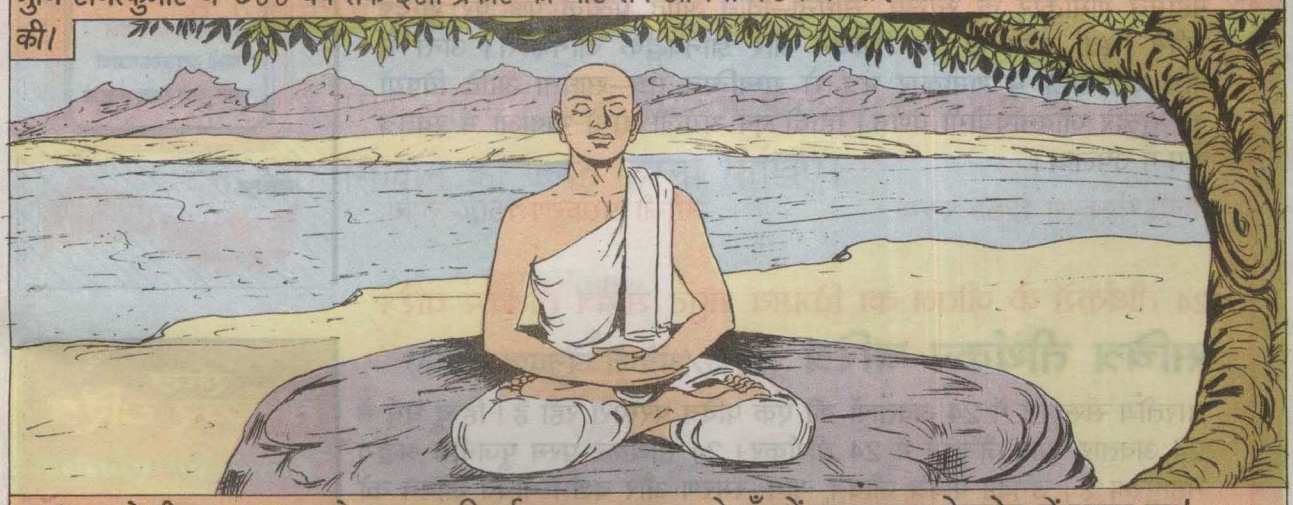

पंच-परमेष्ठी का ध्यान करते हुए समाधिपूर्वक प्राण त्यागकर वे पाँचवें सनत्कुमार देवलोक में उत्पन्न हुए।

कथाबोध–

प्राणी जो शुभ कर्म करता है उसका इस जन्म में और अगले जन्म में भी शुभ फल मिलता है। तो किसी के साथ द्वेष और शत्रुता करके उसके बुरे फल भी पाता है। सनत्कुमार का चरित्र यही सचाई प्रगट करता है। पूर्व जन्मों में की तपस्या और सेवा के प्रभाव से वह चक्रवर्ती सम्राट बना। इतना सुन्दर और आकर्षक रूप मिला, कि देखकर देव भी दाँतों तले अँगुली दबाने लगे। इस रूप का गर्व उनके मन में हुआ किन्तु देवताओं ने उनके अहंकार की पोल खोल दी कि–जिस शरीर-सौन्दर्य पर आप इतना गर्व कर रहे हैं, उस शरीर में कितने रोग और व्याधियाँ छिपी हैं? शरीर की इस वास्तविकता को पहचानो ! वास्तव में परोपकार, तप ध्यान आदि करने में ही मानव देह की सार्थकता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावपूर्ण सचित्र पुस्तकों का अनमोल संग्रह

भक्ति रस का महाकाव्य

सचित्र भक्तामर स्तोत्र

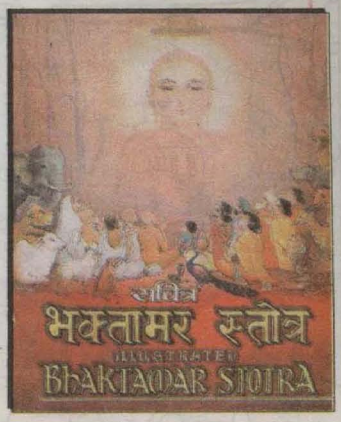

(हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी) (ऋद्धि, मंत्र, यंत्र सहित) भक्तामर स्तोत्र के प्रत्येक श्लोक का भावपूर्ण रंगीन सुन्दर चित्र। सामने मूल श्लोक, अंग्रेजी उच्चारण (रोमन लिपि में) हिन्दी, गुजराती एवं अंग्रेजी अनुवाद के साथ भक्तामर के सैकड़ों संस्करणों में सर्वोत्तम दर्शनीय और पठनीय। आर्ट पेपर पर बहुरंगी छपाई। पक्की जिल्द में। मूल्य 325/- रुपया मात्र

साधना की दिव्य लहर

सचित्र णमोकार महामंत्र (हिन्दी)

Illustrated Namokar Mahamantra (English)

महामंत्र णमोकार के स्वरूप, साधना–विधि आदि प्रत्येक पक्ष पर सुन्दर रंगीन चित्रों द्वारा विस्तृत विवेचन और ज्ञानवर्द्धक जानकारी। अन्त में पाँच परिशिष्टों में णमोकार मंत्र से सम्बन्धित मंत्र–साधना आदि विषयों का सुन्दर जीवनोपयोगी वर्णन। हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में स्वतंत्र रूप में उपलब्ध।

हिन्दी संस्करण 125/- रुपया अंग्रेजी संस्करण 150/- रुपया

24 तीर्थंकरों के जीवन का चित्रमय संपुट सचित्र तीर्थंकर चरित्र

सचित्र तीर्थंकर चरित्र (हिन्दी/अंग्रेजी अनुवाद सहित)

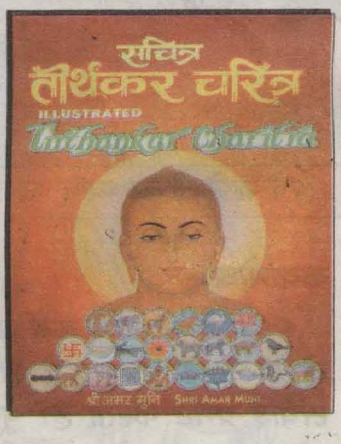

भारतीय संस्कृति में 24 अवतारों की एक पवित्र परम्परा रही है। हिन्दू धर्म में 24 अवतार, और जैनधर्म में 24 तीर्थंकर। 24 तीर्थंकर परम पूजनीय श्रद्धेय महापुरुष हैं। उनका पवित्र जीवन, नाम–स्मरण और दर्शन मानव जीवन को कृतार्थ करता है। इस पुस्तक में 24 तीर्थंकरों का प्रामाणिक जीवन चरित्र हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में, इतिहास–शैली में लिया गया है। बीच–बीच में इनकी जीवन घटनाओं को जीवन्त करने वाले मनमोहक मुँह बोलते 54, रंगीन चित्र हैं। अन्त में विविध प्रकार की ज्ञानवर्द्धक जानकारी देने वाले 14 परिशिष्ट व तालिकाएँ भी हैं जो अपने आप में एक सन्दर्भ ग्रन्थ हैं। मनभावन आवरणयुक्त, पक्की जिल्द वाला ग्रन्थ। बॉक्स पैकिंग युक्त। मूल्य केवल 200/- रुपया

पुस्तकें मंगाने के लिये निम्न पते पर ड्राफ्ट/मनीआर्डर भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा भेज दी जायेंगी।

SHREE DIWAKAR PRAKASHAN
7, Awagarh House, Opp. Anjna Cinema, M. G. Road,
Agra-282 002 Phone : (0562) 351165

For Private & Personal Use Only

अनुभव करके देखिए

- दूसरों की सेवा करने में कितना सुख मिलता है।
- अपराधी को क्षमा करने में कितना आनन्द मिलता है।
- जरूरतमन्द को समय पर सहयोग देने में कितना सन्तोष मिलता है।
- एक हिंसक और मांसाहारी को–शाकाहारी जीवन शैली सिखाने में कितनी प्रसन्नता मिलती है।
- जीवन में सुख, सन्तोष और प्रसन्नता पाने के लिए लेने की जगह देना और सिखाने की जगह करना सीखिए।

आपका शुभ चिन्तक :
शाकाहार एवं व्यसनमुक्ति कार्यक्रम के सूत्रधार-
रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
"नयनतारा", सुभाष चौक, जलगाँव-425 001
फोन : 23903, 25903, 27322, 27268

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन साहित्य के इतिहास में एक नया शुभारम्भ

सचित्र आगम हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद के साथ

जैन संस्कृति का मूल आधार है आगम। आगमों के कठिन विषय को सुरम्य रंगीन चित्रों के द्वारा मनोरंजक और सुबोध शैली में मूल प्राकृत पाठ, सरल हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रस्तुत करने का ऐतिहासिक प्रयत्न।

अब तक प्रकाशित आगम

सचित्र उत्तराध्ययन सूत्र — मूल्य 500.00
(भगवान महावीर की अन्तिम वाणी अत्यन्त शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्द्धक जीवन सन्देश।)

सचित्र अन्तकृद्दशासूत्र — मूल्य 500.00
अष्टम अंग। 90 मोक्षगामी आत्माओं का तप-साधना पूर्ण रोचक जीवन वृत्तान्त।

सचित्र ज्ञाता धर्मकथांगसूत्र (भाग 1, 2)
प्रत्येक का मूल्य 500.00
भगवान महावीर द्वारा कथित बोधप्रद दृष्टान्त एवं रूपकों आदि को सुरम्य चित्रों द्वारा सरल सुबोध शैली में प्रस्तुत किया गया है।

सचित्र कल्पसूत्र — मूल्य 500.00
पर्युषण पर्व में पठनीय 24 तीर्थंकरों का जीवन-चरित्र व स्थविरावली आदि का वर्णन। रंगीन चित्रमय।

सचित्र दशवैकालिक सूत्र — मूल्य 500.00
जैन श्रमण की सरल आचार संहिता : जीवन में पद-पद पर काम आने वाले विवेकयुक्त संयत व्यवहार, भोजन, भाषा, विनय आदि की मार्गदर्शक सूचनाएँ। आचार विधि को रंगीन चित्रों के माध्यम से आकर्षक और सुबोध बनाया गया है।

सचित्र नन्दी सूत्र — मूल्य 500.00
ज्ञान के विविध स्वरूपों का अनेक युक्ति एवं दृष्टान्तों के साथ रोचक वर्णन। चित्रों द्वारा ज्ञान के सूक्ष्म स्वरूपों को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया है।

सचित्र आचारांग सूत्र — मूल्य 500.00
जैन धर्म के आचार विचार का आधारभूत शास्त्र। जिसमें अहिंसा, संयम, तप, अप्रमाद आदि विषयों पर बहुत ही सुन्दर विवेचन है। भगवान महावीर की साधना का भी रोचक इतिहास इसमें है।

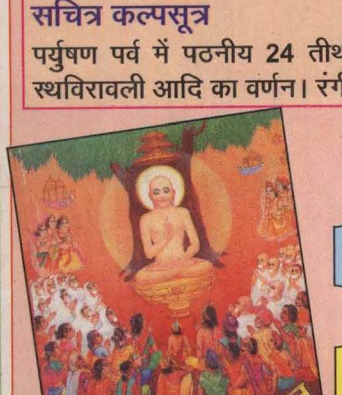

प्रकाशित सचित्र आगमों के सैट का मूल्य 4,000/-

प्राप्ति स्थान :
श्री दिवाकर प्रकाशन
ए-7, अवागढ़ हाउस, एम. जी. रोड,
आगरा-282002. फोन : (0562) 351165

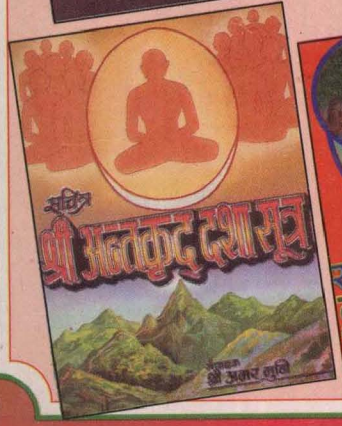

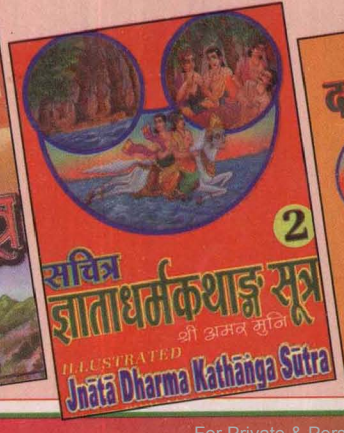

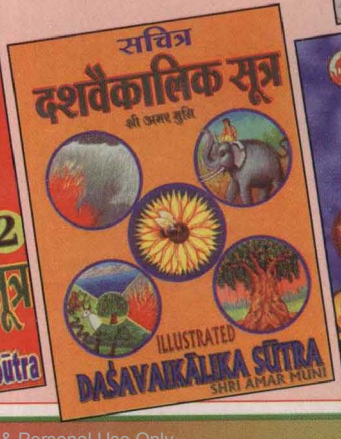

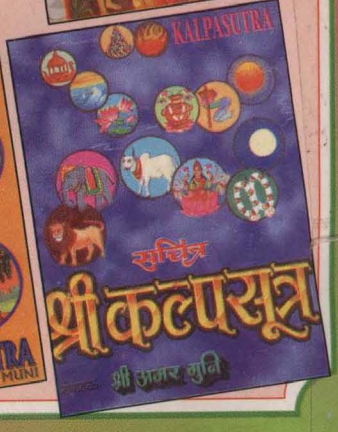

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org